फरीदाबाद
मजदूर समाचार

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर **306** 1/– *दिसम्बर* **2013**

सहमतियों को अस्थिर करते अचम्भे

✶ हर व्यक्ति अस्थिर करने वाला एक बिन्दू है।

✶ प्रत्येक व्यक्ति हर समय स्वयं अस्थिर रहती है।

✶ यह हम सब द्वारा किये जाते अनन्त प्रयोग हैं जो हम में अस्थिरता को सजीव रखते हैं।

✶ हर एक की प्रयोगों की जिद किन्हीं भी सहमतियों-समझौतों को स्थिर नहीं रहने देती।

✶ प्रयोगों में जब रचनात्मक अभिव्यक्ति मुखर होती है तब हम अचम्भित होते हैं।

✶ कहते-सुनते हैं : — आज तो चमक रहे हो ; — आज बहुत सुन्दर लग रहे हो ; — आज आपके चेहरे पे क्या दमक है ; — आज बहुत खुश लग रहे हैं।

✶ यह प्रयोगों में उभरती रचनात्मक अभिव्यक्तियों की झलक हैं।

✶ '' जैसे हम ने एक-दूसरे को पहली बार देखा हो।'' — दो वर्ष बाद भी मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा हटाने के समय के एक मजदूर के यह शब्द विश्व-भर में अचम्भा पैदा करते हैं।

✶ अन्तरिक्ष यात्रियों ने उपग्रह से बाहर निकल कर जब-जब पृथ्वी को देखा है तब-तब मुख से ''वाह !'' निकला है। कईयों ने कहा है कि उन्होंने पृथ्वी को पहली बार देखा।

✶ अचम्भे हमें व्यक्ति में समाये ब्रह्माण्ड को दिखाते हैं।

✶ शिशु के अपने तन, वस्तुओं, शब्दों से प्रयोगों के अनुभव सर्व सुलभ जानकारी हैं।

✶ हम में प्रयोग, हमारे प्रयोग समय के साथ मूर्त व अमूर्त, दोनों हो सकते हैं पर अचम्भों की क्षमता उनमें कायम रहती है।

✶ सत्ता-कम्पनी-सरकार के एक जाने-माने सलाहकार ने पूरी धीरता-गम्भीरता से साहबों की भर्त्सना करते हुये लिखा है : साहब लोग जीवन की वास्तविकता से कट गये हैं; गौण बातों को फेंटने में अपनी ऊर्जा बहा रहे हैं ; पाताल में कूद गये हैं ; प्रयोगों की क्षमता खो चुके हैं।

✶ तभी तो : दिल्ली के इर्द-गिर्द ही आज सैंकड़ों मजदूर राजनीतिक कैदी हैं ; इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन मानेसर में 600 कमाण्डो स्थाई तौर पर तैनात किये गये हैं।

✶ मजदूरों के चौतरफा प्रयोग ऐसे अचम्भे उत्पन्न कर रहे हैं कि एक मामले में तो पाताल में गिर रहे साहबों ने वास्तविकता को स्वीकार करते हुये मजदूरों को पत्रों में लिखा : आपको हम यहाँ काम पर नहीं रख सकते क्योंकि आप उकसाने-भड़काने वाले और हिस्सेदार-साझेदार थे। यह शब्द साहबों ने 546 मजदूरों को प्रत्येक मजदूर के नाम से अलग-अलग भेजे पत्रों में लिखे।

✶ यह अचम्भा, ऐसे अचम्भे सहमतियों से बने-टिके ढाँचों के नाकारा हो जाने, समझौतों के अर्थहीन हो जाने, व्यर्थ-असंगत-निष्फल होते जाने की अभिव्यक्तियाँ हैं।

✶ हमारे निरन्तर प्रयोग आज ऐसे समय में हो रहे हैं जहाँ माँगों के इर्द-गिर्द बनाई जाती सहमतियों-समझौतों के लिये स्थान ही गायब हो रहा है। सहमति-समझौते के लिये की जाती माथापच्ची के नतीजे कुछ दिन के लिये भी भरोसे लायक नहीं होते।

✶ प्रयोगों की गहनता और व्यापकता अपने को व्यक्त करने के लिये शब्द ढूँढ रही है, शब्द रच रही है।

✶ अचम्भों के अचम्भे का दौर है यह ।■

निमन्त्रण

आज विश्व के सात अरब लोग कई तानों-बानों से जुड़े हैं। यह समय बहुत-ही बड़े परिवर्तनों का दौर है। आज छोटे से छोटी बात जंगल की आग का चरित्र लिये है। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। दिसम्बर में 29 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयासों से मुक्त ; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश है।

फैक्ट्रियों में रिसावों की, तरेड़ों की एक झलक

एसोसियेट एप्लाइन्सेज मजदूर : '' सिडकुल इन्डस्ट्रीयल एरिया सितारगंज, उद्यमसिंह नगर, उत्तराखण्ड स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर गैस चूल्हे बनाते हैं। शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है पर छूटने का कोई समय नहीं है, रात 9-9½ , रात 2-3 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 150 से 240 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। उत्तराखण्ड सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, अकुशल श्रमिक 5440, अर्ध-कुशल श्रमिक 5905 और कुशल श्रमिक का 6375 रुपये है पर कम्पनी 4000-4200 रुपये तनखा देती है और वह भी बहुत देरी से। जनवरी 2013 की तनखा 1 मार्च तक नहीं दी तब 250 मजदूर गेट पर एकत्र हुये और सितारगंज सिडकुल के क्षेत्रीय प्रबन्धक के कार्यालय की तरफ चले। रास्ते में काँग्रेस पार्टी के नेता ने रोका, वापस लाया, मैनेजमेन्ट से बात की, उसी दिन साँय जनवरी की तनखा दी। फरवरी की तनखा 7 मार्च को देने का वादा किया पर दी 11 मार्च को। और, सिलसिला-सा है : प्रैस शॉप, स्टोर, वैल्ड शॉप के मजदूर काम बन्द करते हैं तब तनखा मिलती है। इधर अक्टूबर की तनखा 23 नवम्बर तक नहीं दी तब साँय 5½ बजे काम बन्द कर मजदूर गेट पर एकत्र हो गये। मैनेजर ने आश्वासन दिया और 25 नवम्बर को तनखा दी। पावर प्रैसों पर उँगली कटती रहती हैं, इधर एक मजदूर की चार उँगली कटी..... प्रायवेट में इलाज। सितारगंज मुख्य मन्त्री का विधान सभा क्षेत्र है और सिडकुल औद्योगिक क्षेत्र के पास कोई अस्पताल नहीं है, 16 किलोमीटर दूर है। यहाँ 200 से ज्यादा प्लॉट हैं और 165 फैक्ट्रियाँ चालू हैं। बॉश (सी बी आई), ए एन जी, अम्बूजा एक्सपोर्ट, बालाजी एक्शन प्लाई, एडवान्स्ड फुड, हेन्ज, पारलेजी, ला पोला, रॉकेट एण्ड बैंकेस्टर, धागा कम्पनी आदि बड़ी फैक्ट्रियाँ हैं पर क्षेत्र में ई. एस. आई. के प्रावधान लागू नहीं हैं।''

ओरियन्ट क्राफ्ट वरकर : '' प्लॉट बी-5, सैक्टर-65, नोएडा, उत्तर प्रदेश स्थित फैक्ट्री में 200 महिला मजदूरों की ड्युटी सुबह पौने आठ से साँय पौने सात और 1800 पुरुष मजदूरों की सुबह पौने 9 से रात पौने 8, रात पौने दस, रात पौने दो बजे तक। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से, 63 रुपये कुछ पैसे प्रति घण्टा। कैन्टीन है, चाय के नाम पर गरम पानी, 20 रुपये में थाली वाला भोजन ठीक नहीं। रात पौने दो बजे तक रोकते हैं तब कम्पनी रोटी के लिये मात्र 20 रुपये देती है — मजदूर बाहर 40 रुपये में खाना खाते हैं। हैल्परों की तनखा 5200 रुपये, प्रैसमैन-चैकर की 5900, सिलाई कारीगर की 6580 रुपये। कार्ड एक ही जगह पंच होते हैं पर दो नाम से बना रखे हैं, ओरियन्ट क्राफ्ट के नाम से 1200 मजदूरों के और श्रीराम एक्सपोर्ट के नाम से 800 मजदूरों के। ई. एस. आई. व पी. एफ. सब मजदूरों की हैं। प्रोडक्शन में और फिनिशिंग में भी फ्लोर इन्चार्ज महिला मजदूरों से दुर्व्यवहार करते हैं।''

भारती एग्जिम मजदूर : '' प्लॉट बी-303 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री के गेट पर यह नाम है, गेट पास पर ***मगध क्रियेशन*** लिखा है, और पहचान-पत्र पर ***आधार मार्केटिंग*** लिखा है। यहाँ सुबह 9½ से रात 9 की ड्युटी रोज है और रात 12½ , अगली सुबह 4 बजे तक रोक लेते हैं। महिला मजदूरों को रात 12½ तक ही रोकते हैं और फिर वाहन से छोड़ कर आते हैं। कम्पनी चाय खूब पिलाती है — 11 बजे, 4 बजे, 7 बजे चाय व बिस्कुट, रात 11 बजे, रात 12½ । रात 9 बजे बाद रोकते हैं तब रोटी के लिये 50 रुपये देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ठेकेदार नहीं हैं, सब मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं, और 250 मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. 5-6 मजदूरों की ही हैं। सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 377 की बजाय 270 रुपये देते हैं और भुगतान 15 दिन में। फिनिशिंग विभाग में तनखा मात्र 4500 रुपये है।''

कम्पनियाँ जो करती हैं, मैनेजमेन्टें जो करती हैं वह महत्वपूर्ण है पर मजदूर जो करते हैं वह ज्यादा महत्वपूर्ण है, बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है। कम्पनियाँ जो करती हैं वह हमें भी अवश्य बतायें पर कृपया वह सब विस्तार में बतायें जो अकेले, छोटे समूह में, बड़े समूह में मजदूर करते हैं। हम जो करते हैं उनके बारे में चर्चाओं के लिये मजदूर समाचार को भी एक मंच बनायें।

सैटेलाइट फोरजिंग श्रमिक : '' प्लॉट 139 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री को सी एम (मुख्य मंत्री) फैक्ट्री बताते हैं। यहाँ सिर्फ स्टाफ स्थाई है और तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***मारुति सुजुकी*** कारों तथा ***होण्डा*** दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। गर्म काम है, लोहे का काम है, चोटें लगती रहती हैं, एम्बुलैन्स नहीं है, ज्यादा चोट लगने पर मजदूर को मोटर साइकिल पर ई एस आई अस्पताल ले जाते हैं। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से और गड़बड़ी कर महीने में 8-10 घण्टे के पैसे खा भी जाते हैं। पूर्ण उपस्थिति पर सैटेलाइट फोरजिंग के खाते में 500 रुपये प्रति मजदूर प्रोत्साहन राशि चढाते हैं पर मजदूरों की एक-दो अनुपस्थिति दिखा कर यह पैसे खा जाते हैं। कैन्टीन में चाय बनती है, 12 घण्टे में दो बार देते हैं, खाना बाहर से आता है और मजदूर से थाली के 10 रुपये लेते हैं। फैक्ट्री में गाली-गलौज तो चलती ही रहती हैं।''

कृष्णा लेबल कामगार : '' 82 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में चीन से जैकेट और सूट आते हैं। यहाँ प्रैस करके उन्हें पैक करते हैं। कुछ लोग चीन से चेक करने आते हैं। सुबह 9 से रात 12 बजे तक रोज ड्युटी, रविवार को साँय 6 बजे छोड़ देते हैं। कुछ समय पहले तो दो बार सुबह 9 से अगली सुबह 6 बजे तक काम करवाया। फिर छह बजे बोले कि 8 बजे तक फैक्ट्री में सो लो, उठा कर नाश्ता देंगे और फिर 9 बजे से काम करना। लेकिन एक घण्टे बाद, 7 बजे ही उठा दिया और समोसा दे कर काम पर लगा दिया। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 22 रुपये प्रतिघण्टा देते हैं। सब मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं और 80 में 30-35 महिला मजदूर भी हैं। तनखा से ई एस आई तथा पी एफ की राशि काटते हैं पर ई एस आई कार्ड नहीं देते। बोनस नहीं दिया। कम्पनी की यहाँ उद्योग विहार में दूसरी फैक्ट्री है और आई एम टी मानेसर में तीसरी फैक्ट्री है।''

सुपर ऑटो श्रमिक : '' प्लॉट 13 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***होण्डा*** तथा ***यामाहा*** दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। फैक्ट्री में एक मजदूर भी स्थाई नहीं है, 250 कैजुअल वरकर हैं और 50-60 मजदूर दो ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। तीन सौ मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। चोट लगने पर सैक्टर-10 में मोगा नर्सिंग होम भेज देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों को हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं, तनखा 5000-5200 रुपये। कैन्टीन नहीं है, 12 घण्टे में एक कप चाय देते हैं। भोजन के लिये स्थान निर्धारित नहीं— मशीनों के पीछे बैठ कर खाते हैं।''

कॉटन क्राफ्ट कामगार : '' प्लॉट 297 सैक्टर-6, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूरों की सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। तनखा पर काम करने वाले 150 सिलाई कारीगरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। पीस रेट पर काम करते 150 टेलरों की कम्पनी से खटपट चलती ही रहती थी, कम रेट पर सिलाई कारीगर काम बन्द कर देते और रेट बढाने पर ही काम शुरू करते। हम में से कुछ लोग सिलाई मास्टर को दारू पिला कर और पैसे खिला कर अच्छा मैटेरियल, स्थान, हैल्पर प्राप्त कर 12 घण्टे में 600-800 रुपये बनाते जबकि बाकी के टाइम पर मैटेरियल नहीं, हैल्पर नहीं के कारण 100-200-300 रुपये ही बनते....... पीस रेट वाले कई टेलर फैक्ट्री छोड़ गये। कैन्टीन नहीं है, चाय..... साँय 5½ बजे तनखा वालों को एक कप चाय देते हैं पर पीस रेट वालों को वह भी नहीं।''

(बाकी पेज तीन पर)

नीरू प्रोडक्शन वरकर : '' 95 बी, सन्त नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9 की ड्युटी है और रात 12, अगली

फैक्ट्रियों में रिसावों.......(पेज दो का शेष)

सुबह 4, सुबह 8 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 180-190 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से कुछ ज्यादा, 3 घण्टे के लिये 4 घण्टे के पैसे रात 12 बजे तक और फिर दुगुनी दर से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 70 मजदूरों में 4 हैल्परों की और स्टाफ के 20 लोगों में 5 मास्टरों की। सिलाई कारीगरों की तनखा 7800-8500 रुपये, प्रैसमैन-दाग हटाने वाले गनमैन-पैकिंग मजदूरों की 6000 रुपये। बीडिंग (मोती-सितारे) का काम बरेली से हो कर आता है, यहाँ सैम्पल अथवा मरम्मत करती 6 महिला मजदूरों को 8 घण्टे के 190 रुपये देते हैं। फैक्ट्री बेसमेन्ट में है, बहुत घुटन रहती है।''

लारा एक्सपोर्ट मजदूर : '' 155 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को कम्पनी पहले बोनस देती थी पर इस वर्ष बोनस नहीं दिया।''

ए एस के ऑटोमोटिव श्रमिक : '' प्लॉट 28 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर, 200 कैजुअल वरकर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***होण्डा, यामाहा, टी वी एस, हीरो*** दुपहियों के ब्रेक पैनल, इन्जन की बॉडी बनाते हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते। ठेकेदार और उनके सुपरवाइजर गाली देते हैं, तनखा देरी से, गड़बड़ कर हर मजदूर के हर महीने 200-300 रुपये खा जाते हैं, सी एन सी ऑपरेटरों को भी हैल्पर ग्रेड देते हैं।''

भैरों इम्ब्राइड्री कामगार : '' सी-16 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में कम्प्युटर इम्ब्राइड्री ऑपरेटरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और 12 घण्टे के 260 रुपये देते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं, महीने के तीसों दिन काम। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन किसी मजदूर को नहीं देते। सात महिला मजदूरों की तनखा 5200 रुपये, प्रैसमैनों की 6000 रुपये ।''

विनय ऑटो वरकर : '' प्लॉट 42 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 50 स्थाई मजदूर और पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***मिण्डा, डेन्सो, प्रिकोल, जे एन एस, नपिनो ऑटो, डेल्फी*** तथा चीन व इटली को निर्यात के लिये वायरिंग हारनैस, इंजेक्शन मोल्डिंग के कार्य करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। गड़बड़ कर तनखा से हर महीने 200-300 रुपये खा जाते हैं। ओवर टाइम में भी गड़बड़ करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं — ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड देते हैं पर छोड़ने पर फण्ड के पैसे मजदूरों को नहीं मिलते। बहुत-ही जरूरी होने पर भी मैनेजमेन्ट गेट पास नहीं देती।''

श्रीसन्स मजदूर : '' प्लॉट 76-77 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। अगस्त में एक ठेकेदार चला गया। तनखा और ओवर टाइम के पैसों के लिये कम्पनी के एच. आर. विभाग अधिकारी कल आना, परसों आना कह कर टालते रहे और फिर धमका कर कहने लगे कि आगे से फोन मत करना — गेट पर गार्ड फैक्ट्री के अन्दर नहीं जाने देते।''

लुमैक्स वरकर : '' प्लॉट 46 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 38 मोल्डिंग मशीनों द्वारा ***होण्डा*** दुपहियों की सीट, ***मारुति सुजुकी*** कारों के मडगार्ड, ***जनरल मोटर-महिन्द्रा-आयशर ट्रैक्टर*** के पैट्रोल टैंक तथा फिल्टर एयर क्लीनर आदि बनते थे। फैक्ट्री का 2008 में महीने में 4 करोड़ रुपये का उत्पादन था, 2009 में 8 करोड़ रुपये महीना, 2010 से 2012 के दौरान 11-12 करोड़ रुपये प्रतिमाह का उत्पादन। प्रतिदिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, रविवार को भी काम। आर्डर कम होने पर दिसम्बर 2012 में कम्पनी ने ठेकेदार के जरिये रखे 150 मजदूर निकाल दिये। अब महीने में 7-8 करोड़ रुपये का उत्पादन 56 स्थाई मजदूर 8-8 घण्टे की तीन शिफ्टों में और ठेकेदार के जरिये रखे 225 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में करते हैं। रविवार को अब छुट्टी। यूनियन 56 स्थाई मजदूरों की है और ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों से यूनियन कोई मतलब नहीं रखती। पर हाँ, ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों का भी उत्पादन निर्धारित है, टारगेट पूरा करने के बाद टोकते नहीं। पानी-पेशाब के लिये टोकन नहीं लेना पड़ता। एक्सीडेन्ट होने पर तुरन्त ई. एस. आई. ले जाते हैं। एम्बुलैन्स है। गाली नहीं। कम्पनी 12 घण्टे में 3 चाय देती है। वैसे, तनखा से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर दिसम्बर में जिन 150 मजदूरों को निकाला वे 2 वर्ष से काम कर रहे थे और ठेकेदार दूसरा था — उन 150 मजदूरों में अधिकतर को फण्ड के पैसे नहीं मिले। अब वाली ठेकेदार कम्पनी ने पी.एफ. नम्बर दिया है पर 4-6 महीने में नौकरी छोड़ने वाले मजदूर को फण्ड के पैसे अब भी नहीं मिलते। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को पे-स्लिप नहीं, सवेतन छुट्टी नहीं, बोनस नहीं, ऑपरेटर को हैल्पर ग्रेड, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, वर्दी-जूते नहीं, और तनखा देरी से। एक्सीडेन्ट होते हैं, हाथ कटते हैं।''

-अनुभव-विचार- ..(पेज चार का शेष)

बन जाऊँगा तब ठीक रहेगा। अब देख रहा हूँ कि जो प्रैसें हैं और जो काम मैं सीख रहा हूँ वे तो बेकार होने की राह पर हैं। टच स्क्रीन, इलेक्ट्रोनिक्स प्रिन्टिंग लाइन को बहुत तेजी से बदल रही है। क्या लाइन देखूँ ?''

कुछ पते

25-50 ***पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिए***

1. श्रम मन्त्री, भारत सरकार
   श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग नई दिल्ली —110001
2. केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त
   14 भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली—110066
3. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त,
   भविष्य निधि भवन, सैक्टर-15ए, फरीदबाद—121007
4. उप-क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त
   प्लॉट 43, सैक्टर-44, गुड़गाँव — 122002
5. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
   पंचदीप भवन, सी आई जी रोड़, नई दिल्ली-110002
6. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
   पंचदीप भवन, सैक्टर-16, फरीदाबाद— 121002
7. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
   30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ
8. श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली—110054

★ ***दिल्ली*** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन (1.10.2013 से)
अकुशल श्रमिक : 8086 रुपये (8 घण्टे के 311 रुपये) ;
अर्ध-कुशल श्रमिक : 8918रुपये (8 घण्टे के 343 रुपये) ;
कुशल श्रमिक: 9802 रुपये (8 घण्टे के 377 रुपये)।

★ 1.7.2013 से ***हरियाणा*** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल मजदूर : 5342 रुपये (8 घण्टे के 205 रुपये) ; उच्च कुशल मजदूर : 5992 रुपये (8 घण्टे के 230 रुपये)।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।
★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये—पैसे की दिक्कत रहती है।
★ महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं।
मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

जुड़ने-जोड़ने के लिये

मजदूर हितैषी मजदूर

लक्ष्य है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना

सदस्य बनें, सहयोगी बनें

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का।..... भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है। ..... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. ....हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है। 4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर... ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।...

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा निमन्त्रण है : **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन के सदस्य बनें। "समय नहीं है" के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद- 121001 है।

फोन : 0129-6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालत करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं।

फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब "मजदूर मोर्चा" के सम्पादक हैं।

.......-अनुभव-विचार-.......

आकर्ष एक्सपोर्ट मजदूर : " पिछले वर्ष इन्हीं दिनों (नवम्बर-दिसम्बर 2012) हम एफ-48 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में काम करती थी। यह भाई भी तब हमारे साथ वहीं काम करता था। दो सौ मजदूरों में हम 60 टेलर थे। पुरुष सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 225 और महिला सिलाई कारीगरों को 210 रुपये देते थे। हमारी सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी रहती थी और फिनिशिंग विभाग में तो रात 1 बजे तक रोकते थे। फिनिशिंग में काम करती 20 महिला मजदूर रात 1 बजे छूट कर स्वयं अपने कमरों पर जाती। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन (कुशल श्रमिक के लिये तब 8 घण्टे के 328 रुपये था) तो कम-से-कम लें और इसके बारे में क्या करें पर हम टेलर आपस में बातें करते रहते थे। हम में से एक सिलाई कारीगर ने एक यूनियन के पास चलने को कहा। साठ में से 11 टेलर ही राजी हुये और हम लोग एक यूनियन लीडर के पास गये। नेता ने हम से सदस्यता के लिये 250-250 रुपये लिये और हमारे नाम लिखे। चौथे दिन कम्पनी ने 10 सिलाई कारीगरों को गेट पर रोक दिया। हमें यूनियन के पास ले जाने वाले ने लीडर को फोन किया। यूनियन नेता के कहने पर लेबर इन्सपैक्टर फैक्ट्री पहुँचा। हम में से ही नेता बन रहा सिलाई कारीगर इन्सपैक्टर के साथ गाड़ी में घूमा। फिर पार्क में हमें वह बोला कि केस लड़ेंगे या हिसाब लेंगे, इस बीच यहाँ-वहाँ काम कर लो। छह दिन बाद उसने रात 9 बजे बातचीत के लिये तेखण्ड सब्जी मण्डी बुलाया। केस लड़ोगे या हिसाब लोगे पूछा तो हम ने उस पर छोड़ दिया। फिर चार दिन बाद वह बोला कि हिसाब ले लो — हमारी डेढ महीने की तनखा बकाया थी। दो किस्तों में पैसे दिये। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन के हिसाब से एक महीने के पैसे दिये तब प्रत्येक से 1000-1000 रुपये यूनियन लीडर ने लिये। फिर बाकी 15 दिन के पैसे दिये तब लीडर ने हर एक से 200-200 रुपये लिये। बाद में पता चला कि हमें यूनियन के पास ले जाने वाले टेलर ने 30 हजार रुपये लिये। हम ने कान पकड़ लिये कि आगे से नेताओं के चक्कर में नहीं आयेंगी।"

लिलिपुट एक्सपोर्ट श्रमिक : " प्लॉट सी-117 सैक्टर-63, नोएडा, उत्तर प्रदेश स्थित फैक्ट्री में भर्ती करते समय बीस प्रतिशत बोनस बोलते थे पर देते नहीं थे। नवम्बर 2011 में दिवाली से कुछ दिन पहले हम ने प्रोडक्शन मैनेजर से बोनस के बारे में पूछना शुरू किया तो साहब कहते कि बात कर रहा हूँ। मजदूरों ने जनरल मैनेजर से भी बात की तो वे भी इधर-उधर की बात करते रहे, तसल्ली देते रहे। हम समझ गये कि कम्पनी बोनस नहीं देगी। तब सुबह एक-आध घण्टा काम कर मजदूर फैक्ट्री में बैठने लगे। दो दिन इस प्रकार फैक्ट्री में उत्पादन बन्द रहा। सुपरवाइजर, इनचार्ज, मास्टर चुप रहे। ऐसे में तीसरी मंजिल पर काम करते 300 टेलरों ने परसनल विभाग के अधिकारियों की पिटाई की और फिर फ्लोर पर बैठ गये। बाकी तीन मंजिलों पर काम होता रहा — फैक्ट्री में 2000 मजदूर हैं। तीसरी मंजिल पर बैठे हमें 5 घण्टे हो गये तब जनरल मैनेजर बोला कि काम नहीं करना है तो बाहर जाओ। जोश में आ कर हम 150 बाहर आ गये जबकि हम में से 150 अन्दर ही रहे। फोन कर एक यूनियन लीडर को बुलाया। लीडर फैक्ट्री गेट पर आया और बोला कि कम्पनी ड्युटी पर रखना चाहती है तो 20 प्रतिशत बोनस, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से, और कम्पनी लन्च दिया करे। हिसाब देना है तो 20 प्रतिशत बोनस और तीन महीने की नोटिस पे कम्पनी दे। फिर नेता ने हमें फैक्ट्री से 50 मीटर दूर एक पार्क में बैठा दिया। हम एक महीना पार्क में बैठे, वहीं हमारी हाजिरी लगती। मजदूर कहते कि फैक्ट्री गेट पर चलो तो लीडर कहता कि वहाँ जाओगे तो पुलिस पीटेगी। नेता एक महीने तसल्ली देता रहा और पैसे खा कर चला गया। एक महीने की दिहाड़ी टूटी, बोनस नहीं, नोटिस पे नहीं.... किये काम के पैसे ही कम्पनी ने दिये। हम 150 ने आपस में तय किया कि आगे से हम किसी यूनियन लीडर के चक्कर में कभी नहीं आयेंगे। जो करना होगा वह हम खुद मिल कर करेंगे।"

प्रिन्टिंग प्रैस वरकर : " प्रिन्टिंग लाइन का मैं अर्ध-कुशल श्रमिक हूँ। दिल्ली सरकार द्वारा अर्ध-कुशल के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन इस समय 8918 रुपये है। बीमार पड़ने पर मैं ओखला इन्डस्ट्रीयल एरिया में एक प्रेस में नौकरी छोड़ कर डेढ महीने पहले गाँव गया था। जहाँ मैं काम करता था वहाँ भी मेरी तनखा 6500 रुपये ही थी पर इधर 22 से 28 नवम्बर के बीच ओखला औद्योगिक क्षेत्र में नौकरी ढूँढते हुये मैं 20-25 प्रिन्टिंग प्रैसों में गया तो तनखा 4200, 4500, 4800, 5200, 5500 रुपये बताई गई। ओखला फेज-1 में ई.एस.आई. अस्पताल के पास नूतन प्रिन्टर्स, डी-ब्लॉक में डी-15/1, बी-170 में सोनू प्रिन्टर्स, सी-47 में डिलाइट, सौरभ प्रिन्टर्स...... ओखला फेज-2 में डी-7/10, ए-103/5, मैक्सीमम प्रैस..... के चक्कर लगाये। गेट पर गार्ड कहते कि जगह खाली है, ऊपर जाओ। ऊपर डायरेक्टर 4200 से 5500 रुपये तनखा बता कर कहते कि बेटा काम कर लो, काम देख कर पैसे बढा देंगे। ओखला में 180-200 प्रिन्टिंग प्रैसें हैं और एक प्रैस में 20 से 120 मजदूर काम करते हैं। सब जगह 12-12 घण्टे की शिफ्ट हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। मुश्किल से दस प्रतिशत प्रिन्टिंग प्रैस मजदूरों के ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। भाई सिलाई लाइन में है और उस काम से चट चुका है। प्रिन्टिंग लाइन में एक दोस्त के जरिये भाई ने मुझे प्रैस में लगाया था। सोचता था कि कारीगर

(बाकी पेज तीन पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।